

| | |
|-------------|--|
| Course | : B.Ed., Part-II |
| Paper | : XVI (जैविक विज्ञान का अध्ययन) (Pedagogy of Biological Science) |
| Prepared by | : Dr. Sangeeta Kumari |
| Topic | : पाठ्यचर्या संगठन के उपागम (Approaches of Curriculum Organization) |

1. प्रस्तावना (Introduction) :

शिक्षा तीन ध्रुवों की प्रक्रिया है। इसमें एक ओर शिक्षक, दूसरी ओर छात्र एवं तीसरी ओर पाठ्यचर्या होता है। वास्तव में पाठ्यचर्या वह साधन है जो शैक्षिक प्रक्रिया के लिए आधार बनता है। यदि शिक्षा को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया माना जाए तो शिक्षा में अधिगम व शिक्षण पाठ्यचर्या के माध्यम से होता है।

प्रस्तुत इकाई इस पाठ की तीसरी इकाई है। इस इकाई में पाठ्यचर्या संगठन के विभिन्न उपागमों की चर्चा विस्तारपूर्वक की गई है।

2. पाठ्यचर्या संगठन के उपागम (Approaches of Curriculum Organization) :

जीव विज्ञान पाठ्यचर्या के संगठन हेतु विभिन्न उपागमों का अनुसरण किया जाता है।

2.1 तर्कपूर्ण उपागम (Logical Approach) :

यह सर्वाधिक प्रचलित उपागम है। इसमें विषय-वस्तु को अनेक खण्डों में विभाजित कर लिया जाता है और फिर छात्रों के मानसिक स्तर के अनुसार पाठ्य-वस्तु का चयन कर उसे तर्कपूर्ण विधि से क्रमबद्ध कर लेते हैं। तार्किक दृष्टिकोण से पाठ्य-सामग्री की क्रमबद्धता में मनोविज्ञान आधार प्रदान करता है, जिसके कारण छात्र की रुचि, जिज्ञासा, उत्साह, आयु, ग्रहणशीलता, योग्यता आदि को दृष्टिगत रखते हुए पाठ्यचर्या नियोजित किया जाता है।

2.2 प्रकरण उपागम (Topical Approach) :

इस उपागम के अन्तर्गत विभिन्न कक्षाओं के लिए बालकों को मानसिक स्तर और आयु के अनुसार उपविषय निर्धारित किए जाते हैं और ये उपविषय पूर्णतः उसी कक्षा अथवा कक्षाओं में समाप्त कर दिए जाते हैं। साथ ही, उन विषयों के प्रश्नों को हल करने का पर्याप्त अभ्यास भी उसी स्तर पर करा दिया जाता है। पाठ्यचर्या संगठन की प्रकरण उपागम वह उपागम है जिसमें किसी विषय के एक प्रकरण विशेष को जिस कक्षा में आरम्भ किया जाता है उसे पूर्णरूप से उसी कक्षा में समाप्त कर दिया जाता है। इस उपागम में शिक्षक और बालक किसी एक विषय को चुन लेते हैं जो वास्तविक आवश्यकता को अनुरूप होता है। सर्वप्रथम सिद्धान्त निरूपण होता है। तदन्तर मुख्य विषय को विभिन्न उपविषयों में बाँट दिया जाता है। किसी एक उपविषय के अन्तर्गत जितनी भी पाठ्य-वस्तु आती है, बता दी जाती है। जीव विज्ञान के किसी एक उपविषय को लेकर भौतिक एवं रसायन विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान भी साथ-साथ दिया जाता है। पाचन क्रिया का अध्ययन करते समय जीवन की आवश्यकता, भोजन के तत्वों, पाचक रसों, उत्सर्जन यन्त्रों, रक्त, मज्जा और अस्थि आदि के निर्माण की जानकारी देनी पड़ती है। खेत सम्बन्धी अध्ययन में जीवाणु, बीज, अंकुरण, रोग के विविध कीटाणु एवं नाश हेतु वांछित रसायन सम्बन्धी पदार्थों का अध्ययन अनायास की होने लगता है। इस विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान एक विषयगत न होकर अन्य सम्बन्धित विषयों के

परिप्रेक्ष्य में दिया जाता है। बालक भिन्न बनते हैं, उनका विषय ज्ञान व्यापक और स्थायी होता है। इस विधि में एक ही प्रकरण को पूर्णतः उसी कक्षा में पूरा करा दिया जाता है जिससे बालक एक ही प्रकार की समस्याएँ एक लम्बे समय तक हल करता रहता है। परन्तु ऐसा करने से एक ही विषय के विभिन्न उप-विषय या प्रकरण एक दूसरे से बिलकुल अलग प्रतीत होते हैं जिससे एक विषय विभिन्न विषयों से तथा एक प्रकरण अन्य प्रकरणों से यह सम्बन्धित नहीं हो पाता है, जो कि प्रकरण विधि की सबसे बड़ी कमी है। इस विधि में एक दोष यह भी है कि छोटी कक्षाओं के बच्चे मानसिक रूप से पूर्णतया विकसित नहीं होते हैं, कि वे किसी विषय विशेष की जटिलता समस्याओं को एक निश्चित समय में पूर्णतया समझ लें। इस उपागम द्वारा पर्याप्त मात्रा में उस विषय का ज्ञान हो जाता है जो आगे चलकर बालकों को लाभदायक सिद्ध होता है। काफी समय तक पढ़ने और अभ्यास करने के कारण बालक उस विषय का पूर्ण ज्ञाता हो जाता है। लेकिन इस उपागम में कुछ दोष भी होते हैं। बहुत समय तक एक ही विषय को पढ़ते-पढ़ते बालक उस विषय के प्रति अपनी रुचि खो बैठता है। विषय वस्तु में विविधता न होने के कारण बालक उसे केवल मशीन की तरह ही पढ़ते रहता है। इस पद्धति से सह-सम्बन्ध से प्राप्त होने वाले लाभ विद्यार्थियों को नहीं मिल पाते। इस पद्धति के अन्तर्गत विषय 'सरल से कठिन की ओर' शिक्षण सूत्र के आधार पर संगठित नहीं किया जा सकता। यह पद्धति छोटी कक्षाओं के लिए उपयोगी सिद्ध नहीं होती।

2.3 चक्राकार उपागम (Spiral Approach) :

इस उपागम के अन्तर्गत किसी भी उपविषय को किसी कक्षा विशेष में पढ़ाकर पूर्णतया समाप्त नहीं कर दिया जाता बल्कि बालकों की आयु और मानसिक स्तर के अनुसार उस उपविषय के केवल उतने ही कठिन स्थल कराए जाते हैं जिन्हें बालक आसानी से समझ सकें। उनकी आयु और मानसिक स्तर बढ़ जाने पर उस उपविषय को फिर पढ़ाया जाता है और तब पहले की अपेक्षा अधिक कठिन स्थल समझाए जाते हैं। इस प्रकार बालक के मानसिक स्तर के साथ-साथ उप विषय की कठिनाई स्तर बढ़ाई जाती है। प्रत्यय की पूरी जानकारी प्रारम्भ में ही दे दी जाती है तथा हमारे नवीन ज्ञान के प्रस्तुतीकरण का आधार पूर्व ज्ञान ही होता है। चक्राकार विधि में किसी विषय के एक प्रत्यय की थोड़ी-थोड़ी जानकारी प्रत्येक कक्षा में कराई जाती है। जैसे-जैसे बच्चा आगे की कक्षा में पहुँचता है, वैसे-वैसे पूर्व में पढ़ाए गए प्रत्ययों का ज्ञान भी विस्तृत होता चला जाता है। इस प्रकार बच्चों के मानसिक विकास के साथ-साथ उस प्रत्यय की जटिलता भी बढ़ती जाती है जिससे बच्चे उन प्रकरणों का ज्ञान सरलता एवं सुगमता से प्राप्त करते चले जाते हैं। इस विधि द्वारा पाठ्यचर्या का संगठन करने पर उन प्रकरणों की पुनरावृत्ति स्वतः ही होती रहती है तथा अन्य प्रत्ययों में सह-सम्बन्ध भी स्थापित होता रहता है। जीव विज्ञान अथवा किसी अन्य विषय के शिक्षण में इस उपागम का मनोवैज्ञानिक महत्व है जो गेस्टाल्ट सिद्धान्त के अनुरूप है। जैसे-आरम्भ में हम किसी मनुष्य के पूरे शरीर को आकार मात्र समझते हैं। यह मानव आकार मानव शरीर रचना के ज्ञान का केन्द्र होता है। धीरे-धीरे हम मानव शरीर के अंगों को सिर और धड़ के रूप में पहचान कर सिर और धड़ के विविध भागों का परिचय प्राप्त करते हैं और क्रमशः प्रत्येक भाग के उपभाग और उसकी रचना, कार्य-विधि, उपयोगिता आदि का विस्तारपूर्ण सक्षम ज्ञान प्राप्त करते हैं। मानव के स्थूल शरीर से आरम्भ करके क्रमशः सम्पूर्ण शरीर की सूक्ष्मातिसूक्ष्म स्थिति का ज्ञान प्राप्त करते हैं। सामान्य से विशेष की ओर चलना और मुख्य विषय पर आधारित ज्ञान का वृत्त की भाँति विस्तार करते जाना इस शिक्षण विधि की विशेषता है। इस प्रकार इस विधि के अनुसार बच्चे द्वारा किसी भी स्तर पर विद्यालय छोड़ देने पर भी उसे सभी प्रत्ययों की थोड़ी-बहुत जानकारी शेष रह जाती है। इस दृष्टि से पाठ्यचर्या, संगठन की यह एक उपयोगी विधि है। यह पद्धति 'सरल से कठिन की ओर' तथा पूर्ण से अंश की ओर दो प्रमुख शिक्षण सूत्रों पर आधारित है। विषय-वस्तु का कठिनाई स्तर बालकों के मानसिक स्तर के अनुकूल होने के कारण बालकों को विषय अरुचिपूर्ण नहीं लगता। बालक को प्राप्त किए हुए ज्ञान को कई बार दोहराने का अवसर मिलता है। एक ही कक्षा में कई उप-विषय साथ-साथ पढ़ने के कारण सह-सम्बन्ध का अवसर

प्राप्त होता है और विषय अर्थपूर्ण बन जाता है। इस पद्धति में कुछ दोष भी हैं। बालकों को किसी भी विषय या उप-विषय को भली-भाँति एवं पूर्णरूपेण से समझने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता है। किसी कक्षा में किसी उप-विषय को ठीक प्रकार से न समझ सकने के कारण उस उप-विषय के प्रति बालक में अरुचि उत्पन्न हो जाती है। इस पद्धति में शिक्षण धीमी गति से चलता है।

2.4 आयोजित एवं प्रासंगिक पद्धति (Organised and Incidental Method) :

प्रोजेक्ट विधि द्वारा प्राप्त ज्ञान प्रासंगिक होता है। प्रोजेक्ट प्रणाली हरबर्ट को विषय संगठन का परिणाम है। इसमें एक विषय को केन्द्र मानकर पढ़ाया जाता है। उसे पढ़ाते समय जो अन्य विषय पढ़ाए जाते हैं वे अकस्मात् ही पढ़ाए जाते हैं, यद्यपि पढ़ाने वाले ने इनको पढ़ाने की कोई विशेष योजना नहीं बनाई होती। उदाहरण के रूप में, मान लीजिए, हमारा केन्द्रीय विषय है, "भाखड़ा डैम का भ्रमण"। इस विषय का अध्ययन करते समय पिछले अनुभवों का ज्ञान (इतिहास), स्थान कहाँ है, किधर है, ऊँचा है, नीचा है (भूगोल), जलवायु, वहाँ के पेड़-पौधे, बिजली कैसे बनेगी, मशीनें किसी प्रकार चलती हैं (विज्ञान एवं इन्जीनियरिंग), भ्रमण का व्यय, भाखड़ा डैम का व्यय, सम्पूर्ण योजना का व्यय, रुपया कहाँ से आया (गणित) आदि का ज्ञान आवश्यक लें

पढ़ाने का विषय भाखड़ा डैम का भ्रमण है। इतिहास, भूगोल, विज्ञान, इन्जीनियरिंग तथा गणित का ज्ञान मार्ग में जाते हुए स्वयं ही हो गया है। इस प्रकार की विज्ञान पढ़ाने की विधि को प्रासंगिक विधि कहा जाता है। इस विधि का सिद्धान्त यह है कि ज्ञान एक इकाई है, इसके भिन्न-भिन्न अंग नहीं है। ज्ञान इकाई के रूप में ही देना चाहिए। इस विधि द्वारा यह आशा की जाती है कि विद्यार्थी ज्ञान के सभी अंगों से परिचित हो सकेगा। प्रश्न उठता है कि क्या सचमुच ही विद्यार्थी इस विधि द्वारा कुछ सीख जाते हैं? श्री कुरपु स्वामी ने लिखा है कि, "प्रोजेक्ट में विद्यार्थी, विषय की नवीन बातें नहीं सीखते, बल्कि सीखी हुई बातों को प्रयोग में लाते हैं।" प्रोजेक्ट प्रणाली पढ़ाने की विधि नहीं अपितु अभ्यास की विधि है। इसके अतिरिक्त इस विधि में समय तथा ध्यान दोनों का ही अपव्यय होता है। इस विधि द्वारा विद्यार्थी उच्च कोटि का ज्ञान तो प्राप्त कर सकते हैं, पर विषय नहीं सीख सकते।" विज्ञान पढ़ाने के लिए विशेष योजना अनिवार्य होती है। विज्ञान को विज्ञान रूप में ही पढ़ाया जाना चाहिए जो कि आयोजित विधि द्वारा ही सम्भव है।

2.5 एकीकृत उपागम (Integrated Approach) :

बीसवीं शताब्दी में मनोविज्ञान के क्षेत्र में अनेक प्रयोग हुए तथा अधिगम के अनेक सिद्धान्त प्रतिपादित किए गए। इन्हीं प्रयोगों ने गेस्टाल्टवाद अर्थात् पूर्णाकारवाद को जन्म दिया। इस वाद के अनुसार मस्तिष्क एक इकाई है। मस्तिष्क ज्ञान को छोटे-छोटे टुकड़ों में प्राप्त नहीं करता, बल्कि उसे पूर्ण रूप में ग्रहण करता है। वही वस्तु या विचार मस्तिष्क में स्थिर होता है जो पूर्ण अर्थ देता है।

इन मनोवैज्ञानिक खोजों में शिक्षा को प्रभावित किया तथा गेस्टाल्टवाद के अनुसार अमेरिकी विद्यालयों में एकीकृत पाठ्यचर्या का विकास हुआ। एकीकृत पाठ्यचर्या एकीकरण के सिद्धान्त पर आधारित है जिसके अनुसार कोई विचार तथा क्रिया तथी प्रभावशाली एवं उपयोगी होती है जब उसके विभिन्न भागों या पक्षों में एकता होती है।

अतः एकीकृत पाठ्यचर्या से हमारा विषय उस पाठ्यचर्या से है जिसमें उसके विभिन्न विषय एक-दूसरे से इस प्रकार सम्बन्धित होते हैं कि उनके बीच कोई अवरोध नहीं होता, बल्कि उनमें एकता होती है। इस प्रकार पाठ्यचर्या के विभिन्न विषयों के ज्ञान को विभिन्न खण्डों में प्रस्तुत न करके, सब विषय मिलकर ज्ञान को एक इकाई के रूप में प्रस्तुत करते हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि "ज्ञान एक है"। इस दृष्टि से पाठ्यचर्या के सभी विषय ज्ञानरूपी इकाई के विभिन्न अंग हैं। पठन-पाठन की सुविधा तथा कुछ अन्य व्यावहारिकताओं के कारण शिक्षा के पाठ्यचर्या को विभिन्न

विषयों में विभक्त कर दिया गया है, किन्तु इस विभाजन का यह अर्थ नहीं है कि बालकों को विभिन्न विषयों का अलग-अलग ज्ञान कराया जाए।

शिक्षा का उद्देश्य बालकों को ज्ञान की एकता से परिचित करना है। यह उद्देश्य विषयों को अलग-अलग रूप में पढ़ाने से पूर्ण नहीं हो सकता अर्थात् यह कार्य तथी सम्पन्न हो सकता है जबकि विषयों को एक-दूसरे से सम्बन्धित करके पढ़ाया जाए। इसके लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न विषयों को इस प्रकार सम्बन्धित किया जाए कि उनके बीच किसी प्रकार की दीवार न हो। यह दायित्व शिक्षक का ही है कि वह पाठ्यचर्या के सभी विषयों को सम्बन्धित करे, पाठ्यचर्या की सामग्री का जीवन से सम्बन्ध स्थापित कर तथा प्रत्येक विषय-सामग्री में भी सह-सम्बन्ध स्थापित करे। इस प्रकार जो पाठ्यचर्या उक्त सभी प्रकार, के सम्बन्धों से युक्त हो, उसे ही 'एकीकृत पाठ्यचर्या' की संज्ञा दी जाएगी।

एकीकृत पाठ्यचर्या में ज्ञान को समग्र रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसके माध्यम से छात्र विभिन्न विषयों का ज्ञान एक साथ प्राप्त करते हैं। यह पाठ्यचर्या अनुभव केन्द्रित होता है तथा इससे बालकों को जीवनपयोगी शिक्षा मिलती है। इसमें छात्रों की रुचियों को महत्व दिया जाता है। इससे छात्रों के पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से सम्बन्धित करने में आसानी होती है।

एकीकृत पाठ्यचर्या के कुछ दोष भी हैं। बालकों की रुचियों को ध्यान में रखकर पाठ्यचर्या में एकीकरण करना बहुत कठिन है। इस पाठ्यचर्या में सभी विषयों को एक साथ एकीकरण करना असम्भव होता है। इस प्रकार के पाठ्यचर्या में शिक्षण में बहुत अधिक समय लगता है तथा शिक्षक का कार्य भार बढ़ जाता है।

2.6 जन्तान्त्रिक उपागम (Democratic Approach) :

इस उपागम में पाठ्य-वस्तु चयन का केन्द्र बिन्दु छात्र होता है। उसी से पूछा जाता है कि वह क्या चाहता है और उसके द्वारा बताई समस्या को ही शिक्षा का माध्यम बना लिया जाता है। शिक्षक अपने कौशल से हर पग पर शैक्षिक मोड़ देता चलता है। एक पग छात्र चलता है तो दूसरा पग शिक्षक। पाठ्यचर्या में निश्चित क्रियाओं को समावेश न होकर सम्भावनाएँ दी जा सकती हैं।

2.7 रुचि एवं आवश्यकता केन्द्रित उपागम (Interest and Need Oriented Approach) :

इस उपागम के अन्तर्गत उस पाठ्य-वस्तु का चयन किया जाता है जो छात्रों के लिए विशेष रुचिकर हो। इसका कारण यह हो सकता है कि उस पाठ्य-वस्तु का छात्रों से स्थानीय सम्बन्ध हो। इस उपागम की विशेषता यह है कि इसमें छात्रों द्वारा नियमों एवं सामान्यीकरण की खोज की जाती है और विभिन्न शाखाओं के साथ सह-सम्बन्ध स्थापित हो जाता है।

2.8 प्रक्रिया उपागम (Process Approach) :

पाठ्यचर्या संगठन के प्रक्रिया प्रतिमान में प्रक्रिया को प्राथमिकता दी जाती है। इसमें उद्देश्यों को परिभाषित नहीं किया जाता है बल्कि पाठ्यचर्या के प्रारूप को विकसित करने में पाठ्य-वस्तु के ज्ञान को ही ध्यान में रखा जाता है। इसके अन्तर्गत पाठ्यवस्तु की सहायता से मानवीय गुणों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। इसीलिए इस प्रकार के पाठ्यचर्या को मानववादी पाठ्यचर्या भी कहा जाता है। चूँकि इसमें प्रक्रिया को महत्व दिया जाता है तथा शिक्षण प्रक्रिया शिक्षक द्वारा ही सम्पादित की जाती है। अतः, इस प्रतिमान में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

मानव व्यवस्था के परम्परागत सिद्धान्त की धारणा यह है कि व्यवस्था के सदस्यों में केवल कार्य करने की क्षमता होती है तथा वे निर्देशों का अनुसरण कर सकते हैं परन्तु उनमें कार्य को प्रारम्भ करने अर्थात् पहल करने की क्षमता नहीं होती है तथा न वे किसी प्रकार का निर्णय ही ले सकते हैं। इस व्यवस्था में शिक्षण कार्य शिक्षक-नियन्त्रित होता है। इसमें पाठ्य-वस्तु के प्रस्तुतीकरण पर

अधिक बल दिया जाता है। छात्रों की रुचियों, क्षमताओं एवं अभिवृत्तियों को कोई स्थान नहीं दिया जाता। छात्र केवल मशीन के समान कार्य करता है। शिक्षण स्मृति स्तर का होता है तथा केवल ज्ञानात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति हो पाती है।

मानवीय सम्बन्ध सिद्धान्त परम्परागत सिद्धान्त के विरोधस्वरूप प्रतिपादित किया गया है। इसमें शिक्षक के निर्देशक अथवा परामर्शदाता के रूप में कार्य करता है।

व्यवस्था का आधुनिक सिद्धान्त उपर्युक्त दोनों सिद्धान्तों का समन्वय है। इसके अनुसार व्यवस्था के सदस्य समस्या का समाधान एवं निर्णय लेने की भी क्षमता रखते हैं। इस प्रकार इसमें कार्य और सम्बन्धों का साथ-साथ सदस्यों की निर्णय क्षमता को भी महत्व दिया जाता है। इस प्रकार इसके अन्तर्गत शिक्षण व्यवस्था छात्र केन्द्रित होती है तथा इसमें कार्य के साथ-साथ छात्रों की आवश्यकताओं का भी ध्यान रखा जाता है। इस विचारधारा का सम्बन्ध स्वतन्त्र अध्ययन, अनुदेशन प्रणाली, अनुदेशन प्रारूप तथा अनुदेशन तकनीकी से है। आई० के० डेवीज के अनुसार इसे शैक्षिक तकनीकी का एक पक्ष माना जाता है जिसे प्रणाली उपागम, कहा जाता है। इसमें डेवीज ने शिक्षक को एक प्रबंधक की संज्ञा प्रदान की है तथा इसके चार प्रमुख कार्य— नियोजन, व्यवस्था, अग्रसारण तथा नियन्त्रण बताए हैं।

3. सारांश (Summary) :

अधिगम शिक्षण का कार्यक्रम मात्र पाठ्यचर्या पर निर्भर करता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए एक निश्चित मार्ग की आवश्यकता है। मार्ग न होने पर लक्ष्य पहुँच के बाहर होगा। पाठ्यचर्या शिक्षक व छात्र को एक निश्चित मार्ग प्रदान करता है। पाठ्यचर्या का मनोवैज्ञानिक महत्व भी है। पाठ्यचर्या के ही आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अधिगम शिक्षण निश्चित समय में पूर्ण कर लिया गया है।

पाठ्यचर्या संगठन के विभिन्न उपागम हैं। जैसे— तर्कपूर्ण उपागम, प्रकरण उपागम, चक्राकार उपागम, अयोजित एवं प्रासंगिक उपागम, एकीकृत उपागम, जन्तान्त्रिक उपागम, रुचि एवं आवश्यकता केन्द्रित उपागम तथा प्रक्रिया उपागम।

तर्कपूर्ण उपागम में विषय वस्तु को अनेक खण्डों में विभाजित कर लिया जाता है और फिर छात्रों के मानसिक स्तर के अनुसार पाठ्य वस्तु का चयन कर उसे तर्कपूर्ण विधि से क्रमबद्ध कर लेते हैं।

प्रकरण उपागम के अन्तर्गत विभिन्न कक्षाओं के लिए बालकों को मानसिक स्तर और आयु के अनुसार उपविषय निर्धारित किए जाते हैं और ये उपविषय पूर्णतः उसी कक्षाओं में समाप्त कर दिए जाते हैं।

चक्राकार उपागम के अन्तर्गत किसी भी उपविषय को किसी कक्षा विषय में पढ़ाकर पूर्णतया समाप्त नहीं कर दिया जाता बल्कि बालकों की आयु और मानसिक स्तर के अनुसार उस उपविषय के केवल उतने ही कठिन स्थल कराए जाते हैं जिन्हें बालक आसानी से समझ सके।

प्रासंगिक उपागम में एक विषय को केन्द्र मानकर पढ़ाया जाता है। उसे पढ़ाते समय जो अन्य विषय पढ़ाए जाते हैं वे अकस्मात् ही पढ़ाए जाते हैं।

4. अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise) :

1. पाठ्यचर्या संगठन के उपागम से आप क्या समझते हैं?
What do you understand by approaches of curriculum organization?
2. पाठ्यचर्या संगठन के किन्हीं तीन उपागमों की विवेचना कीजिए।
Discuss any three approaches of curriculum organization.